



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

सारस्वत मोहन मनीषी जी के काव्य में मानवीय संवेदना और सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ. आशा रानी.

टीका राम गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत मेल

drasharathee11081@gmail-com

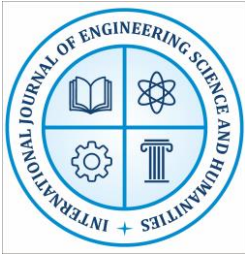
शोध-सार

सारस्वत मोहन मनीषी जी का काव्य मानवीय संवेदना और सामाजिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है। उनके काव्य में मानव-जीवन के दुख-सुख, संघर्ष, आशा, करुणा और सहानुभूति का गहन चित्रण मिलता है, जो पाठक को मानवीयता के मूल भावों से जोड़ता है। सारस्वत मोहन मनीषी समाज को केवल बाहरी संरचना के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत मानवीय संबंधों के ताने-बाने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके काव्य में प्रेम, करुणा, सह-अस्तित्व, नैतिकता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा जैसे मूल्य प्रमुख रूप से उभरते हैं। कवि समाज में व्याप्त विषमता, संवेदनहीनता और नैतिक पतन के प्रति सजग दृष्टि रखते हुए मानवीय चेतना के पुनर्जागरण का आग्रह करता है। उनके काव्य में व्यक्ति और समाज के अंतर्संबंधों को रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि सामाजिक सुधार का आधार मानवीय संवेदना ही है। सरल, प्रभावशाली और भावनात्मक भाषा-शैली के माध्यम से वे सामाजिक मूल्यों को जनसाधारण तक पहुँचाने में सफल होते हैं। इस प्रकार सारस्वत मोहन मनीषी जी का काव्य समकालीन समाज में मानवीय मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: मानवीय संवेदना, सामाजिक मूल्य, करुणा, प्रेम, नैतिक चेतना, सामाजिक न्याय, मानवता, समकालीन हिंदी कविता

भूमिका

काव्य साहित्य केवल कल्पना की उड़ान नहीं है, बल्कि यह समाज का दर्पण भी होता है। सारस्वत मोहन मनीषी जी का काव्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसमें समाज के विभिन्न पक्षों का गंभीर अध्ययन और चित्रण हुआ है। उनके काव्य में सामाजिक न्याय, पारिवारिक मूल्यों की रक्षा, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता, वृद्धों की समस्याएँ, ग्राम्य एवं नगरीय जीवन के बीच बढ़ती खाई, और नैतिकता के क्षरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। सारस्वत मोहन 'मनीषी' के काव्य संग्रह आग के अक्षर में सामाजिक यथार्थ और नैतिक द्वंद्व को बारीकी से उकेरा गया है। उनकी



International Journal of Engineering, Science and Humanities

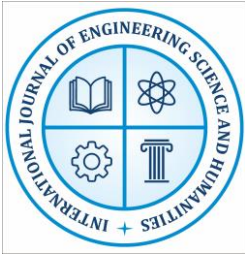
An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

कविता पाप-पुण्य भी इस प्रवृत्ति को दर्शाती है। यह कविता जीवन में नैतिकता और अनैतिकता, पुण्य और पाप के द्वंद्व को अत्यंत गहराई से चित्रित करती है। कवि यहाँ एक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं कि हर मनुष्य के जीवन में पुण्य और पाप एक ही तराजू के दो पलड़े हैं, जिनका संतुलन उसके कर्मों से निर्धारित होता है। कविता का प्रारंभ आँसू कितनी बार आँख से, उड़ना कितनी बार पाँख से जैसी पंक्तियों से होता है, जो यह संकेत देती हैं कि मनुष्य के जीवन में भावनाएँ, संघर्ष और अनुभव बार-बार दोहराए जाते हैं। जीवन में आँसू और उड़ान (संघर्ष और सफलता) साथ-साथ चलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पुण्य और पाप का संतुलन बना रहता है। कवि का यह कथन गीता के कर्म सिद्धांत की याद दिलाता है, जहाँ कहा गया है कि मनुष्य के हर कार्य का एक प्रभाव होता है, और यह प्रभाव ही अंततः पुण्य या पाप के रूप में उसके जीवन पर प्रभाव डालता है।

इसके बाद कवि विभिन्न प्राकृतिक और सामाजिक तत्वों की तुलना करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जीवन में हर सकारात्मक तत्व के साथ एक नकारात्मक पहलू भी जुड़ा होता है। धूप से छाया, ब्रह्म से माया, हँसी से विलाप जैसे वाक्यांश इस तथ्य को दर्शाते हैं कि कोई भी चीज एकांगी नहीं होती। हर चीज के दो पहलू होते हैं और मनुष्य का जीवन इन्हीं विरोधाभासों के बीच संतुलित रहता है। यह विचार भारतीय दर्शन में अद्वैतवाद और द्वैतवाद की अवधारणाओं से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, जहाँ संसार की हर वस्तु और हर क्रिया का एक प्रतिवर्ती प्रभाव होता है।

कविता का मध्य भाग व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों के बीच होने वाले संघर्ष को दर्शाता है। कितनी बार हाथ से कंगना, कितनी बार नृत्य से आँगना जैसी पंक्तियाँ यह संकेत देती हैं कि एक स्त्री के जीवन में कितनी बार उसे सामाजिक परंपराओं से बाँध दिया जाता है, जबकि उसकी आत्मा स्वतंत्र रहना चाहती है। यह स्त्री की पारंपरिक भूमिका और उसकी स्वतंत्रता के बीच के द्वंद्व को दर्शाने वाला एक गहरा प्रतीक है। कविता के अंतिम भाग में कवि जीवन और मृत्यु के सत्य को उजागर करते हैं। कितनी बार सत्य से धंधा, अर्थी से अपना ही कंधा पंक्तियाँ यह दिखाती हैं कि मनुष्य जीवनभर अपने स्वार्थ के लिए व्यापार करता है, सत्य को विकृत करता है, लेकिन अंत में उसे अपने ही कंधों पर अर्थी उठानी पड़ती है। यहाँ मृत्यु का उल्लेख यह दिखाता है कि अंततः मनुष्य को अपने कर्मों का परिणाम भुगतना ही पड़ता है। यह पंक्तियाँ संत कबीर के दोहों की याद दिलाती हैं, जहाँ उन्होंने भी कहा था कि मृत्यु के बाद मनुष्य को अपने पापों और पुण्यों का हिसाब देना पड़ता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

पाप – पुण्य कविता की सबसे गहरी सीख यह है कि जीवन में पुण्य और पाप के बीच संतुलन आवश्यक है। कोई भी मनुष्य पूरी तरह से पापी या पूरी तरह से पुण्यात्मा नहीं होता, बल्कि उसके कर्म ही तय करते हैं कि उसका जीवन कैसा होगा। इस कविता के माध्यम से मनीषी जी हमें आत्मविश्लेषण करने और अपने कर्मों की समीक्षा करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके काव्य में समाज और काव्य के इस अंतर्संबंध को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ वे न केवल सामाजिक विसंगतियों को दर्शाते हैं, बल्कि पाठकों को आत्मबोध और नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी देते हैं।¹

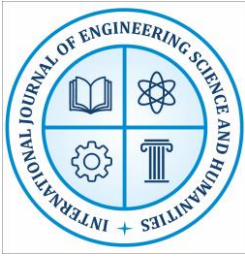
समाज एवं काव्य

समाज और काव्य का परस्पर संबंध अत्यंत गहरा और व्यापक है। काव्य, समाज का दर्पण होता है, जो उसकी वास्तविकताओं, मूल्यों, विसंगतियों और संघर्षों को प्रतिबिंबित करता है। सारस्वत मोहन 'मनीषी' के काव्य संग्रह आग के अक्षर में भी समाज और काव्य के इस अंतर्संबंध को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कवि केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होता, बल्कि वह समाज का मार्गदर्शक भी होता है। 'मनीषी' के काव्य में समाज की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया गया है, जिनमें भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, धार्मिक संकीर्णता, पारिवारिक विघटन, और सांस्कृतिक ह्रास जैसी गंभीर चिंताएँ शामिल हैं। उनका काव्य समाज को जागरूक करने और चेतना को विकसित करने का कार्य करता है। 'मनीषी' ने अपने काव्य में समाज में व्याप्त विसंगतियों को प्रमुखता से चित्रित किया है। उदाहरण के लिए, उनकी कई कविताएँ भ्रष्टाचार, वर्ग संघर्ष, और अन्याय के विरुद्ध आक्रोश प्रकट करती हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि आज की कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गई है, बल्कि समाज की पीड़ा और आक्रोश को व्यक्त करने का एक माध्यम बन गई है।²

काव्य का प्रमुख उद्देश्य समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना होता है। 'मनीषी' की कविताएँ इस उद्देश्य को पूर्ण रूप से निभाती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल नैतिकता और सच्चाई का समर्थन करती हैं, बल्कि वे समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध भी संघर्ष करती हैं। उदाहरण के लिए, उनकी कविता मानव सभी समान हैं में समानता और सामाजिक समरसता का संदेश दिया गया है काव्य में समाज के विभिन्न वर्गों, जैसे श्रमिक वर्ग, किसान, व्यापारी, और शासकों का भी चित्रण किया जाता है। 'मनीषी' की कविताओं में निम्न और मध्यम वर्ग के संघर्ष, उनकी पीड़ा, और उनकी आकांक्षाएँ मुखर रूप से सामने आती हैं। उदाहरण के लिए, कविता बीमार

¹ आग के अक्षर (1982) प्रथम संस्करण, प्रकाशक गांधी नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 35

² आग के अक्षर (1982) प्रथम संस्करण, प्रकाशक गांधी नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 35



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

वैद्य में सामाजिक ढाँचे की कमजोरियों और व्यवस्था की असफलताओं को उजागर किया गया है।³ साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत गहरा है। काव्य केवल सौंदर्य और अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज का दर्पण भी होता है। एक कवि अपने अनुभवों, संवेदनाओं और दृष्टिकोण से समाज की स्थिति को उजागर करता है। सारस्वत मोहन 'मनीषी' जी का काव्य भी इस सामाजिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करता है, जिसमें समाज की विसंगतियाँ, न्याय-अन्याय, पारिवारिक मूल्य और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं।

उनकी कविताएँ समाज में व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार, जातिवाद, गरीबी, और सामाजिक विडंबनाओं का चित्रण करती हैं। वे न केवल इन समस्याओं की पहचान कराते हैं, बल्कि उनके समाधान की ओर भी संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि उनके काव्य संग्रह आग के अक्षर में कोई कविता सामाजिक न्याय पर आधारित हो, तो उसमें स्पष्ट रूप से यह संदेश मिलेगा कि अन्याय और शोषण के विरुद्ध समाज को खड़ा होना चाहिए।⁴ एक गाँव में रघु नामक किसान मेहनत करके अपनी जीविका चलाता था। वह ईमानदार था और न्यायप्रिय भी। लेकिन समाज में उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता था—भ्रष्ट जमींदार, पक्षपाती पंचायत, और लोभी साहूकार उसकी मेहनत का शोषण करते थे। फिर भी, वह अपने मूल्यों पर अडिग रहा।

एक दिन, गाँव के लोग एक बड़े संकट में फँस गए—सुखाड़ के कारण फसल बर्बाद हो गई। जमींदार और साहूकारों ने किसानों से अधिक कर वसूली की माँग की। रघु ने अन्य किसानों को संगठित किया और गाँव की पंचायत में इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। उसने कहा, समाज की असली शक्ति उसकी एकता और न्यायप्रियता में है। जब तक हम अन्याय के विरुद्ध खड़े नहीं होंगे, तब तक हमारी पीढ़ियाँ इसी शोषण का शिकार बनती रहेंगी। रघु की प्रेरणा से गाँव के लोगों ने संगठित होकर अपने अधिकारों की माँग की और आखिरकार साहूकार और जमींदार को पीछे हटना पड़ा। इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया गया कि काव्य और साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी हो सकते हैं।⁵

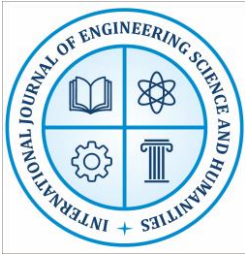
मनीषी जी के काव्य में मूल्य

मनीषी जी के काव्य में मूल्यपरकता प्रमुखता से विद्यमान है। उन्होंने अपने साहित्य में न केवल पारंपरिक मूल्यों की महत्ता को स्वीकार किया है, बल्कि आधुनिक समाज में नैतिकता के ह्रास और मूल्यहीनता पर भी प्रकाश डाला है। सारस्वत मोहन मनीषी जी के काव्य में गहरे सामाजिक,

³ वही पृष्ठ संख्या 36

⁴ वही पृष्ठ संख्या 36-37

⁵ आग के अक्षर (1982) प्रथम संस्करण, प्रकाशक गांधी नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 35



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

नैतिक और मानवीय मूल्यों की प्रधानता देखी जाती है। उनका साहित्य केवल कल्पना और भावनाओं का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। वे अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों, अन्याय, और नैतिक पतन की आलोचना करते हैं और लोगों को सत्य, ईमानदारी, प्रेम, समर्पण, और सहानुभूति जैसे गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।⁶

उनकी कविताओं में सामाजिक न्याय और समर्पण के महत्व को विशेष रूप से उजागर किया गया है। वे मानते हैं कि समाज की उन्नति तभी संभव है जब उसमें न्याय की स्थापना हो और लोग परस्पर सहयोग व त्याग की भावना से आगे बढ़ें। उनकी कई रचनाएँ ऐसे चरित्रों को प्रस्तुत करती हैं, जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और सत्य की राह पर चलते हुए कठिनाइयों को सहन करते हैं। इसके अलावा, मनीषी जी के काव्य में पारिवारिक मूल्यों को भी प्रमुखता से दर्शाया गया है। वे संयुक्त परिवार की महत्ता पर बल देते हैं और यह दिखाते हैं कि आधुनिक समाज में किस प्रकार परिवार टूट रहे हैं, जिससे मानवीय संवेदनाएँ भी क्षीण हो रही हैं। उनके काव्य में नारी सम्मान, वृद्धों की उपेक्षा, और स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता जैसे विषयों को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है।⁷ एक और महत्वपूर्ण मूल्य जो उनके काव्य में उभरकर आता है, वह है मानवीयता की गिरावट। वे इस बात को लेकर चिंतित हैं कि आधुनिकता और भौतिकवाद की दौड़ में लोग नैतिकता को भूलते जा रहे हैं। उनकी कविताएँ यह संदेश देती हैं कि यदि मनुष्य अपने भीतर करुणा, दया और नैतिकता को नहीं बनाए रखेगा, तो समाज में अराजकता फैल जाएगी। मनीषी जी का काव्य केवल सौंदर्यपरक नहीं, बल्कि विचारोत्तेजक भी है। यह पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है और उन्हें अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित करता है। उनके काव्य में मूल्य केवल आदर्शों की बात नहीं करते, बल्कि वे समाज में परिवर्तन लाने का आह्वान भी करते हैं।⁸

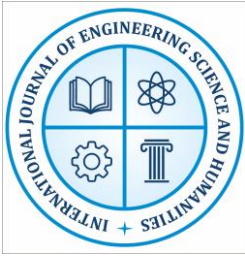
समाज में न्याय और समर्पण का मूल्य

उनके काव्य में न्याय और समर्पण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वे मानते हैं कि समाज की प्रगति तभी संभव है जब न्याय की स्थापना हो और लोग परस्पर समर्पण की भावना रखें। उनके कई काव्यपंक्तियाँ यह दर्शाती हैं कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और निष्ठा से किया गया समर्पण ही समाज को सुदृढ़ बना सकता है। मनीषी जी की कविताएँ समाज में न्याय और

⁶ वही पृष्ठ संख्या 124

⁷ वही पृष्ठ संख्या 125

⁸ वही पृष्ठ संख्या 126



International Journal of Engineering, Science and Humanities

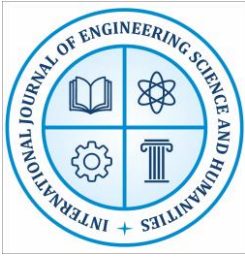
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

समर्पण के महत्व को रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट संदेश देती हैं कि सच्चा न्याय वही होता है जो बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए समान हो। पुस्तक में कई स्थानों पर यह विचार प्रमुखता से व्यक्त किया गया है कि आज की न्याय व्यवस्था में स्वार्थ और सत्ता का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिससे न्याय केवल एक दिखावे की वस्तु बनकर रह गया है। कवि ने असमानता, शोषण और सत्ता के अन्यायपूर्ण स्वरूप पर तीखा प्रहार किया है और यह दिखाया है कि कैसे कमजोर और गरीब वर्ग के लोगों को न्याय मिलने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जबकि धन और प्रभावशाली लोगों के लिए कानून एक खिलौना बन गया है। आज का समाज वर्गभेद, सत्ता के अत्याचार और नैतिक मूल्यों के पतन से ग्रस्त है। न्याय की देवी की आँखों पर बंधी पट्टी अब निष्पक्षता का प्रतीक नहीं रही, बल्कि एक मजाक बन गई है, जिसमें निर्णय अक्सर अमीरों और शक्तिशाली लोगों के पक्ष में होते हैं। गरीबों की आवाज सुनी ही नहीं जाती और अगर सुनी भी जाती है, तो उसे अनदेखा कर दिया जाता है। इसी असमानता को दर्शाते हुए कवि ने अपनी कविताओं में न्याय की अवधारणा पर सवाल उठाए हैं और यह दिखाया है कि यदि न्याय केवल कुछ विशेष लोगों के लिए ही सुलभ होगा, तो समाज में असंतोष, आक्रोश और विद्रोह की भावना जन्म लेगी।⁹ इसके विपरीत, कवि यह भी मानते हैं कि समर्पण और निस्वार्थ सेवा समाज को सही दिशा में ले जा सकते हैं। उनकी कविताओं में यह संदेश मिलता है कि यदि लोग केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि समाज के हित में भी कार्य करें, तो एक न्यायसंगत और संतुलित व्यवस्था स्थापित हो सकती है। समर्पण का वास्तविक मूल्य तभी सिद्ध होता है जब व्यक्ति अपने निजी हितों से ऊपर उठकर दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करता है। यही भावना समाज में संतुलन बनाए रखती है और न्याय को वास्तविक स्वरूप प्रदान करती है।

संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार

परिवार सामाजिक संरचना की आधारशिला है। मनीषी जी के काव्य में संयुक्त परिवार की गरिमा और एकल परिवार की जटिलताओं को रेखांकित किया गया है। वे परिवार में बढ़ती दूरी, आत्मीयता की कमी, तथा बुजुर्गों की उपेक्षा जैसी समस्याओं पर गहरा चिंतन प्रस्तुत करते हैं। मनीषी जी की कविताओं में पारिवारिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। उन्होंने यह दर्शाया है कि किस प्रकार आधुनिक समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है और एकल परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह परिवर्तन केवल सामाजिक संरचना का बदलाव नहीं, बल्कि संबंधों की कमजोरी, आत्मकेंद्रित जीवनशैली और मानवीय मूल्यों के ह्रास का संकेत है। पहले

⁹ 'राजनीति की परिभाषा' कविता में न्याय और अन्याय का तुलनात्मक विश्लेषण पृष्ठ संख्या 62



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

के समय में परिवार केवल रक्त संबंधों का समूह नहीं था, बल्कि एक ऐसी संस्था थी जहाँ हर सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होता था, बुजुर्गों का आदर किया जाता था और बच्चों को नैतिक शिक्षा परिवार से ही मिलती थी। लेकिन आज भौतिकवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की चाह में लोग छोटे-छोटे परिवारों तक सीमित हो गए हैं, जहाँ भावनात्मक जुड़ाव की जगह औपचारिकता ने ले ली है।¹⁰

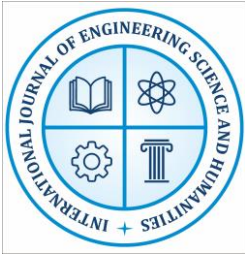
कवि यह दिखाते हैं कि आधुनिक समाज में बढ़ती व्यस्तता और आत्मकेंद्रित सोच ने संयुक्त परिवारों को तोड़कर एकल परिवारों की संस्कृति को बढ़ावा दिया है। अब माता-पिता वृद्धावस्था में अकेलेपन और असहायता का सामना कर रहे हैं, जबकि युवा पीढ़ी पारिवारिक मूल्यों से कटती जा रही है। पहले जो घर प्रेम, त्याग और समर्पण का प्रतीक हुआ करते थे, वे अब केवल रहने की जगह बनकर रह गए हैं। एकल परिवारों में स्वतंत्रता तो अधिक है, लेकिन वह स्वतंत्रता रिश्तों की गर्मजोशी और आपसी सहयोग की भावना को भी धीरे-धीरे खत्म कर रही है। यही कारण है कि समाज में अलगाव, अवसाद और असुरक्षा की भावना बढ़ रही है।¹¹ मनीषी जी के अनुसार, यह बदलाव केवल सामाजिक संरचना का परिवर्तन नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपराओं से कटने का परिणाम है। जब परिवार छोटे हो जाते हैं, तो सामाजिक मूल्यों और नैतिकता का स्थान व्यावसायिकता और स्वार्थपरता ले लेती है। संयुक्त परिवार केवल आर्थिक या सामाजिक सुरक्षा का माध्यम नहीं होते थे, बल्कि वे जीवन जीने की एक पद्धति थे, जहाँ हर व्यक्ति अपने सुख-दुख को साझा कर सकता था। लेकिन अब एकल परिवारों में यह भावना कमजोर होती जा रही है, जिससे पारिवारिक मूल्यों में गिरावट आ रही है।

नारी की दशा का चित्रण

मनीषी जी का काव्य नारी की स्थिति को गंभीरता से उठाता है। वे नारी को शक्ति, करुणा, सहनशीलता और संघर्ष का प्रतीक मानते हैं। उनके काव्य में स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसके अधिकार, उसकी स्वतंत्रता, और उसके प्रति समाज की दोहरी मानसिकता को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। मनीषी जी की कविताओं में नारी जीवन की संघर्षमय परिस्थितियाँ गहराई से चित्रित की गई हैं। उन्होंने समाज में महिलाओं की स्थिति को न केवल एक भावनात्मक दृष्टिकोण से देखा है, बल्कि उसे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में भी विश्लेषित किया है। उनकी कविताएँ नारी के संघर्ष, उसकी असमानता, और उसके शोषण की पीड़ा को प्रकट करती हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समाज तक, नारी को विभिन्न

¹⁰ आग के अक्षर (1982) प्रथम संस्करण, प्रकाशक गांधी नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 62

¹¹ आग के अक्षर (1982) प्रथम संस्करण, प्रकाशक गांधी नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 80



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

भूमिकाओं में बाँधा गया है – कभी वह त्याग और बलिदान की मूर्ति बनी, तो कभी उसे कमजोर और आश्रित समझा गया। लेकिन सच्चाई यह है कि नारी समाज की आधारशिला रही है और उसके बिना सामाजिक व्यवस्था अधूरी है।¹²

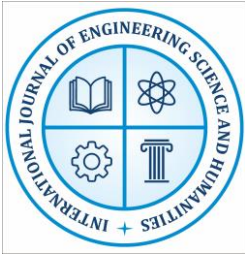
कवि ने नारी जीवन की विडंबना को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। एक ओर, वह सीता, सावित्री, और दुर्गा की तरह पूजनीय है, तो दूसरी ओर, उसे अपमान, अत्याचार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। सीता को बचा पायें, रक्षा को लक्ष्मण दे दो जैसी पंक्तियाँ इस सच्चाई की ओर इशारा करती हैं कि आज भी नारी को सुरक्षा की आवश्यकता है। समाज भले ही प्रगति का दावा करता हो, लेकिन महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध, उनकी उपेक्षा और उनके अधिकारों की अनदेखी यह दिखाती है कि वास्तविकता अभी भी विकट बनी हुई है। यह पंक्ति केवल पौराणिक संदर्भों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आज की परिस्थिति का भी प्रतीक है, जहाँ महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। आज के समाज में, नारी को शिक्षा और स्वतंत्रता तो मिली है, लेकिन उसके संघर्ष समाप्त नहीं हुए हैं। चाहे घर हो या कार्यस्थल, उसे बराबरी का दर्जा देने की बात तो होती है, लेकिन उसे वास्तविक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, कार्यस्थलों पर उत्पीड़न और सामाजिक बंधनों के बीच, नारी का संघर्ष लगातार जारी है। कवि ने इन मुद्दों को केवल आलोचनात्मक रूप में नहीं उठाया, बल्कि उनके समाधान की ओर भी संकेत किया है। उनकी कविताएँ नारी सशक्तिकरण की बात करती हैं, जहाँ वह न केवल अपने अधिकारों के लिए जागरूक हो, बल्कि अपने आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा भी स्वयं कर सके।¹³

मनीषी जी की कविता यह संदेश देती है कि यदि समाज को प्रगति करनी है, तो सबसे पहले नारी को सशक्त करना होगा। नारी केवल सहनशीलता और प्रेम का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह शक्ति और दृढ़ संकल्प का भी प्रतीक है। जब तक समाज में नारी को समान अधिकार और स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, तब तक असली प्रगति अधूरी ही रहेगी। उनकी कविताएँ समाज को यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्या हम वास्तव में महिलाओं को समानता और सुरक्षा प्रदान कर पा रहे हैं, या फिर यह केवल एक दिखावा मात्र रह गया है? कवि की लेखनी नारी के संघर्ष को केवल एक भावनात्मक मुद्दे तक सीमित नहीं रखती, बल्कि यह एक सामाजिक चेतावनी के रूप में काम करती है, जो पाठकों को आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित करती है।¹⁴

¹² 'माँ भारती की शान' कविता नारी शक्ति और उसकी दशा का उल्लेख पृष्ठ संख्या 46

¹³ वही पृष्ठ संख्या 47

¹⁴ वही पृष्ठ संख्या 65



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

निष्कर्ष

सारस्वत मोहन मनीषी जी के काव्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनकी कविता का मूल आधार मानवीय संवेदना और सामाजिक मूल्य हैं। उनका काव्य समाज के यथार्थ से गहराई से जुड़ा हुआ है और मानव जीवन की पीड़ा, संघर्ष, आशा तथा नैतिक चेतना को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। कवि ने प्रेम, करुणा, सह-अस्तित्व और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सारस्वत मोहन मनीषी जी समाज में व्याप्त संवेदनहीनता, नैतिक पतन और मूल्य-विसंगति के प्रति सजग रहते हुए मानवीयता के पुनर्जागरण का संदेश देते हैं। उनके काव्य में व्यक्ति और समाज के अंतर्संबंधों को इस प्रकार उकेरा गया है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया मानव-हृदय से आरंभ होती है। उनकी सरल, प्रभावशाली और भावप्रधान काव्य-शैली सामाजिक मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सारस्वत मोहन मनीषी जी का काव्य समकालीन हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन और सामाजिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वर्तमान सामाजिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता निरंतर बनी हुई है।